

बाबा ने कहा, यहाँ तुम स्वयं को बदलने के लिए आये हैं. तुम्हारे में जो भी आसुरी गुण हैं इसे बदल देवी गुण धारण करने हैं. यह हैं देवी-देवता बनने की पढ़ाई.

द्वापर से हम आत्मार्ये देह अभिमान में आने से हमारे में क्रमशः आसुरी गुण जन्म बाय जन्म बढ़ते ही आये हैं. ये आसुरी गुण ही आत्मामें संस्कार के रूप में होते हैं, जिसे पहले तो योगबल से निकालना हैं. फिर आत्मा को देवी गुण से सम्पन्न करना हैं. तभी हम देवी-देवता बनेंगे.

पहले समझे के क्या हैं आत्मा के ओरिजिनल गुण, देवी गुण और आसुरी गुण.

आत्मा के ओरिजिनल गुण -- ज्ञान, पवित्रता, शांति, सुख, आनंद, प्रेम और शक्ति

आत्मा के देवी गुण -- संतुष्टता, धैर्यता, रमणिकता, नियमितता, सत्यता अथवा प्रमाणिकता, हिम्मत, मृदुता, परोपकारिता...और भी बहुत हैं.

आत्मा के आसुरी गुण -- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, में-मेरा पन, ज्यादा जोर से बोलना, किसको दुखी होते देख खुश होना...लिस्ट लंबा हैं.

हमें क्या करना हैं?

सबसे पहले अंतर्मुखी हो कर हमारे में जो भी आसुरी गुण हैं, उसका बड़ी सच्चाई-सफाई से लिस्ट बनाना हैं (इसमें मियाँ-मीठू नहीं बनना हैं, नहितों अपना ही नुकसान करेंगे). आसुरी गुणों का लिस्ट बनाकर हमारे साथ जो रहने वाले हैं इसे चेक करवा लेना चाहिए क्योंकि वह हमें सबसे ज्यादा जानते हैं. अब हरेक आसुरी गुणों को नम्बरवार निकालने के लिए बाबा से योग की शक्ति भरनी हैं. एक या दो वीक वही आसुरी गुण पर वर्क करो. हररोज बाबा से योग करते समय जो भी हमारे में आसुरी अवगुण हैं इसे निकालने के लिए जो भी शक्ति की जरूरत हैं उसे ही भरनी हैं. जैसे की किसमें क्रोध हैं तो बाबा से योग में शांति की शक्ति

आत्मा में भरनी हैं. मोह हैं तो विशुद्ध प्रेम (निस्स्वार्थ प्रेम) की शक्ति भरना हैं. काम हैं तो पवित्रता की शक्ति भरनी हैं. और जहाँ तक वह आसुरी अवगुण हमारे मेसे पुरा निकल न जायें (1 या 2 वीक) तब तक उस पर ही वर्क करो.

याद रहे ये आसुरी गुण हमारे में 63 जन्म के फल स्वरूप हैं तो हमें इसे निकालने में भी पूरी धीरज करनी होगी.

जैसे हम अपने आसुरी अवगुणों को निकाल ने के लिए मेहनत करते हैं वैसे ही दैवी गुण को स्वयं में धारण करने में भी करनी चाहिए. याद रहे हमारे में दैवी-गुण तब धारण होंगे जब सबसे पहले हम नीचे दिये हुए बाबा के महावाक्य को हमारे में धारण करेंगे.

हमें अपने मन-वचन-कर्म से किसी भी अन्य आत्मा को या प्रकृति के पांच तत्वों को दुखी नहीं करना है.

दैवी-गुण हमारे में धारण करने के लिए, फरिश्ते पन के संस्कार इमर्ज करने हैं, यानी गुहग्राही बनना हैं. सामने कैसी भी आत्मा आये पर मुझे उसमें गुण ही देखने हैं और मेरे में गुण ही ग्रहण करने हैं.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to [a.brahmin.soul@gmail.com](mailto:a.brahmin.soul@gmail.com).

[www.bkdrluhar.com](http://www.bkdrluhar.com)